Issn 0973-9777

वर्ष - 6 अंक - 4 जुलाई-अगस्त 2012

भारतीय शोध पत्रिका

आन्वीक्षिकी

भासद्धयी अन्तर्राष्ट्रीय शोध समग्र पत्रिका

एम.पी.ए.एस.वी.औ.

एम.पी.ए.एस.वी.औ. एवं आन्वीक्षिकी
सदस्य सहसंयोजन से प्रकाशित

मनीषा प्रकाशन

www.anvikshikijournal.com

आन्वीक्षिकी

भारतीय शोध पत्रिका

मासद्वयी अन्तर्राष्ट्रीय शोध समग्र पत्रिका

प्रधान सम्पादिका

डॉ. मनीषा शुक्ला,maneeshashukla76@rediffmail.com

पुनर्निरीक्षक संपादक

प्रो. विभा रानी दुबे,काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी, उ.प्र.,भारत

डॉ. नागेन्द्र नारायण मिश्र,इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद,उ.प्र.,भारत

सम्पादक

डॉ. महेन्द्र शुक्ल,डॉ. अंशुमाला मिश्रा

सम्पादक मण्डल

डॉ. एस. पी. उपाध्याय, डॉ. अनीता सिंह, डॉ. राधा वर्मा, डॉ. प्रभा दीक्षित, डॉ. विशाल अशोक आहेर, डॉ. गीता देवी गुप्ता, ज्योति प्रकाश, डॉ. पद्मिनी रविन्द्रनाथ, डॉ. (श्रीमती) विभा चतुर्वेदी, डॉ. नीलमणि प्रसाद सिंह, डॉ. प्रेम चन्द्र यादव, डॉ. रामनिवास पटेल, मनोज कुमार सिंह, सरिता वर्मा, उमाशंकर राम, अवनीश शुक्ला, विजयलक्ष्मी, कविता, विनय पटेल

अन्तर्राष्ट्रीय सलाहकार मण्डल

रेव डोडामगोडा सुमनासार (श्रीलंका), वेन केन्डागेले सुमनारांसी थेरो (श्रीलंका), रेव टी धम्मारतना (श्रीलंका), पी.त्रिराची सोडामा (श्रीलंका), फ्रा च्युतिदेश सैन्सोम्बट (बैंकाक,थाईलैंड), फ्रा बूनसर्मस्त्रिथा (थाईलैंड), डॉ. सीताराम बहादुर थापा (नेपाल), मोहम्मद सौरजाई (जाबोल, ईरान), माजिद करीमजादेह (ईराक), डॉ. अहमद रेजा केईखाय फरजानेह (जाहेडान, ईरान), मोहम्मद जारेई (जाहेडान, ईरान), मोहम्मद मोजटाबा केयाहफरजानेह (जाहेडान, ईरान), डॉ. होसैन जेनाबदी (सिस्तान एवं बलूचिस्तान, ईरान), मोहम्मद जावेद केयाह फरजानेह (जाबोल, ईरान)

प्रबन्धक

महेश्वर शुक्ल,maheshwar.shukla@rediffmail.com

सारांश एवं सूचीपत्र

मोतीलाल बनारसीदास सूचीपत्र वाराणसी, मोतीलाल बनारसीदास सूचीपत्र दिल्ली, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय पत्रिका सूचीपत्र वाराणसी, सेन्ट्रल न्यूज एजेंसी सूचीपत्र दिल्ली, डी.के.पब्लिकेशन सूचीपत्र दिल्ली, नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ साइंस कम्यूनिकेशन एण्ड इन्फारमेशन रिसोर्स सूचीपत्र दिल्ली, नोएडा कॉलेज ऑफ फिज़िकल एजूकेशन सूचीपत्र गौतमबुद्ध नगर

पाठकों से

आन्वीक्षिकी,भारतीय शोध पत्रिका प्रत्येक दो माह (जनवरी, मार्च, मई, जुलाई, सितम्बर एवं नवम्बर) पर एम.पी.ए.एस.वी.ओ.मुद्रण वाराणसी उ.प्र. भारत द्वारा प्रकाशित की जाती है। एक वर्ष में आन्वीक्षिकी,भारतीय शोध पत्रिका 6 भाग हिन्दी एवं 6 भाग अंग्रेजी एवं 3 अतिरिक्तांकों के भाग में प्रकाशित की जाती है। डॉक खर्च दर के सम्बन्ध में जानकारी हेतु सम्पर्क करें।

वार्षिक पाठक मूल्य दर

संस्थागत : भारतीय 4,500+500/-डाक शुल्क,एक प्रति 700+51/- डाक शुल्क,वैदेशिक : 6000+डॉक खर्च,एक प्रति 1000+डाक शुल्क व्यक्तिगत : 3,500+500/-डाक शुल्क,एक प्रति 500+51 डाक शुल्क सहित,वैदेशिक 5000+डाक शुल्क,एक प्रति 1000+डाक शुल्क

विज्ञापन एवं निवेदन

विज्ञापन के संदर्भ में जानकारी प्राप्त करने हेतु प्रधान सम्पादिका के पते पर संपर्क करें। आन्वीक्षिकी एक स्ववित्तपोषित पत्रिका है, अत: किसी भी प्रकार का आर्थिक सहयोग सराहनीय होगा। कृपया अपनी सहयोग राशि चेक अथवा ड्राफ्ट के माध्यम से निम्नलिखित पते पर प्रेषित करें।

सभी पत्राचार निम्नलिखित पते पर ही प्रेषित करें-

बी.32/16 ए. 2/1,गोपालकुंज,नरिया,लंका वाराणसी उ.प्र. भारत,पिन कोड 221005 मोबाइल नं. 09935784387,
टेलीफोन नं. 0542-2310539.,E-mail : maneeshashukla76@rediffmail.com,www.anvikshikijournal.com
मिलने का समय : 3-5 दिन में(रविवार अवकाश)

पत्रिका संयोजन

महेश्वर शुक्ल,maheshwar.shukla@rediffmail.com

प्रकाशन

एम.पी.ए.एस.वी.ओ.मुद्रण

मनीषा प्रकाशन

(पत्रावली संख्या V-34564,पंजीकरण संख्या 533/2007-2008 बी.32/16 ए. 2/1,गोपालकुंज,नरिया, लंका वाराणसी उ.प्र. भारत)

आन्वीक्षिकी

भारतीय शोध पत्रिका

वर्ष–6 अंक–4 जुलाई–2012

शोध प्रपत्र

कालिदास की रचनायें विदुषी विद्योत्तमा कृत हैं** -डॉ. विभा रानी दुबे 1-7
सांख्य दर्शन के आलोक में दु:खत्रयाभिघातजन्य जिज्ञासा का स्वरुप -डॉ. श्रुति दुबे 8-14

महाभारत का युद्ध क्यों हुआ ? -डॉ. राजीव त्रिपाठी 15-20
मनुस्मृति से मनु के स्त्री विषयक आख्यान (अध्याय 4 से 5 के प्रसंग)-डॉ. मनीषा शुक्ला 21-24

महाभारत में अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग -डॉ. राजीव कुमार त्रिपाठी 25-29
श्री कृष्णपन्तस्याभिनन्दनं विश्वनाथ पुस्तकालयस्य (काशी) -डॉ. महेन्द्र शुक्ल 30-32

अकेलेपन से जूझते बुजुर्गों की दास्तां बयान करती हिंदी कविता -डॉ. राधा वर्मा 33-37
समकालीन हिंदी कविता में सांप्रदायिकता की विचारधारा के प्रतिरोधी स्वर -विनय कुमार पटेल 38-40

महेन्द्र भटनागर के गीतों में बिम्ब-योजना -डॉ. आशा वर्मा 41-44
भूमण्डलीकरण र समसामयिक भारतीय नेपाली कविता -योगेश पन्थ 45-49

मध्यकालीन कवि तुकाराम की दृष्टि में नारी : एक विमर्श -डॉ. अंशुमाला मिश्रा 50-56
डॉ. अम्बेडकर का सामाजिक राजनैतिक आन्दोलन -डॉ. प्रेम चन्द्र यादव 57-60

संसद बनाम् सिविल सोसायटी : भारत के विशेष संदर्भ में -डॉ. रामनिवास पटेल 61-71
अनाथ एवं अंगीकृत बच्चों की व्यक्तित्व विशिष्टताओं का अध्ययन -मनीष कुमार चौहान एवं डॉ. विरेन्द्र सिंह यादव 72-75

पूर्व प्राथमिक शिक्षा का प्रभाव एवं समस्यायें -डॉ. चक्रलाल वर्मा 76-79
प्राथमिक विद्यालयों में मध्यान्ह भोजन एवं नि:शुल्क पुस्तकों के वितरण कार्यक्रम का विद्यार्थियों के नामांकन, बौद्धिक विकास एवं अध्ययन आदतों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन -अमरेश कुमार एवं डॉ. विरेन्द्र सिंह यादव 80-84

स्त्री शिक्षा का विकास एवं समस्यायें -डॉ. चक्रलाल वर्मा 85-87
बिहार के साहित्यिक रत्न : जानकी बल्लभ शास्त्री -डॉ. नीतू कुमारी 91-94

खादी उद्योग के क्षेत्र में बुनकरों के योगदान एवं उनकी समस्याओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन (मगहर ग्राम के विशेष संदर्भ में) -दीपशिखा पाण्डेय एवं सरिता यादव 98-101
जीवन मूल्यों में परिवर्तन के फलस्वरुप लैंगिक अनुपात में असंतुलन -डॉ. अनीता सिंह एवं शशि सिंह 102-108

संगीत द्वारा स्वस्थ जीवन हेतु आन्तरिक यात्रा नियंत्रण -डॉ. विभा चतुर्वेदी 109-110
कांग्रेस के आन्दोलन में वामपंथ का उदय -डॉ. अतुल प्रताप सिंह 111-114

प्रिंट ISSN 0973-9777, वेबसाइट ISSN 0973-9777

पत्रावली संख्या V-34564,पंजीकरण संख्या 533/2007-2008
आन्वीक्षिकी ISSN 0973-9777

भारतीय शोध समग्र पत्रिका (2012) **6,111-114**
प्रकाशनार्थ स्वीकृत 2 जून 2012

कांग्रेस के आन्दोलन में वामपंथ का उदय

डॉ. अतुल प्रताप सिंह*

लेखक का घोषणा-पत्र

भारतीय शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी में प्रकाशनार्थ प्रेषित *कांग्रेस के आन्दोलन में वामपंथ का उदय* शीर्षक लेख / शोध प्रपत्र का लेखक मैं *अतुल प्रताप सिंह* घोषणा करता हूँ कि लेखक के रूप में इस लेख की सभी सामग्रियों की जिम्मेदारी लेता हूँ, क्योंकि मैंने स्वयं इसे लिखा है और अच्छी तरह से पढ़ा है और साथ ही अपने लेख / शोध प्रपत्र को शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी में प्रकाशित होने की स्वीकृति देता हूँ। मैं शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी के सम्पादक मण्डल को अपने लेख के संशोधन एवं सम्पादन की पूर्ण अनुमति देता हूँ। आन्वीक्षिकी में लेख प्रकाशित होने पर इसके कापीराइट का अधिकार सम्पादक को देता हूँ।

सारांश

भारत में वामपंथ का उदय प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् हुआ। राष्ट्रीय आन्दोलन में मूलगामी परिवर्तन लाने में इसका काफी महत्वपूर्ण योगदान था। अब तक भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का नेतृत्व करने वाली कांग्रेस का लक्ष्य मात्र राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करना था। वामपंथियों ने श्रमिकों एवं कृषकों की सामाजिक आर्थिक-समस्याओं को राष्ट्रीय आन्दोलन का मुद्दा बना दिया। 1917 ई. में रूस में वाल्शेविक क्रांति की सफलता में सामाजवादी विचारों को भारतीय धरती पर पैर जमाने का सुअवसर प्रदान कर दिया। अब समाजवाद में भारतीय युवा विश्वास करने लगा। सुभाष चन्द्र बोस और जवाहर लाल नेहरू इसके प्रेरणास्रोत बन गये। धीरे-धीरे भारत में दो ताकतवर वामपंथी दल-भारती कम्युनिस्ट पार्टी (सी.पी.आई.) और कांग्रेस समाजवादी पार्टी (सी.एस.पी.) दल उभरे। इस प्रकार दूसरे दशक के अंतिम तथा तीसरे दशक के दौरान कांग्रेस में वामपंथ का उदय हुआ।

भारत की राजनीतिक क्षितिज पर बामपंथियों का उद्भव प्रथम विश्व युद्ध के बाद की महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक है। वैसे तो भारत में मजदूरों, श्रमिकों और कृषकों के आन्दोलन ब्रिटिश स्रामाज्य की स्थापना के साथ ही प्रारम्भ होते है, लेकिन उसमें जो प्रगति 1917 के बाद दिखाई पड़ती है, उसपर स्पष्टतया 1917 में रूसी वोल्सेविक क्रांति की सफलता तथा विश्व युद्ध में फासिस्ट शक्तियों की पराजय का प्रभाव पड़ा। इसी बीच प्रथम विश्व युद्ध के कारण श्रमिकों की समस्याओं में भी अभूतपूर्व वृद्धि हुई। युद्ध जनित मांग में वृद्धि की आपूर्ति नये-नये उद्योगों की स्थापना, श्रमिकों का अत्यधिक शोषण तथा कच्चे माल का उत्पादन करने वाले किसानों का शोषण करके की गयी। परिणामतः श्रमिकों और किसानों की आर्थिक दशा दिन प्रतिदिन बद से बदतर होती गयी। अतः इनमें एक साम्राज्यवाद विरोधी भावना की लहर दौड़ पड़ी जिसे पोषित करने का कार्य किया रूस में समाजवादियों की अपार सफलता ने। रूस में श्रमिकों, किसानों तथा बुद्धिजीवियों ने संगठित होकर निरंकुश जारशाही सत्ता को उखाड़ फेंका तथा समाजवादी राज्य की स्थापना की। इससे प्रेरित होकर सम्पूर्ण विश्व की उपनिवेशी जनता के मन

* प्रवक्ता, इतिहास विभाग, पी. आर. बी. एस. डिग्री कॉलेज रायबरेली (उत्तर प्रदेश) भारत

© लेखक 2012, एम.पी.ए.एस.वी.ओ.मुद्रण एवं आन्वीक्षिकी सदस्य सहसंयोजन से प्रकाशित,सर्वाधिकार सुरक्षित मनीषा प्रकाशन। आज्ञा हेतु कृपया सम्पर्क करें : E-mail : maneeshashukla76@rediffmail.com, इस प्रपत्र को www.anvikshikijournal.com पर पढ़ें

में साम्राज्यवाद को समाप्त करने तथा समाजवाद और वर्गसंघर्ष को अपनाने की भावना का उदय हुआ। परिणामस्वरूप व्यापक स्तर पर मजदूरों और श्रमिकों के संगठन बनने लगे तथा नयी-नयी पार्टियों के उत्थान का मार्ग प्रशस्त हुआ।

अबतक राष्ट्रीय आन्दोलन का नेतृत्व करने वाली कांग्रेस केवल राजनीतिक स्वतंत्रता की पक्षधर थी और वर्ग संघर्ष में उसका विश्वास न था लेकिन वामपंथियों ने राजनीतिक पहलू के अलावा श्रमजीवियों और कृषकों की सामाजिक-आर्थिक समस्याओं को राष्ट्रीय आन्दोलन का मुद्दा बनाने पर बल दिया। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर श्रमिकों की समस्याओं का निवारण करने के लिए 1920 में 'अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन' की स्थापना की गयी, एम. एन. जोशी भारतीय प्रतिनिधि के रूप में शामिल हुए। 31 अक्टूबर 1920 को लाला लाजपत राय की अध्यक्षता में एक 'अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस' का निर्माण किया गया। इधर 1922 में गांधी द्वारा असहयोग आन्दोलन को अकस्मात समाप्त किये जाने पर पूरे देश में इसकी तीखी प्रतिक्रिया हुई। कांग्रेस के अन्दर एक नई पार्टी (स्वराज पार्टी) का जन्म हुआ तथा आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लेने वालों में एक निराशा का वातावरण उत्पन्न हुआ। इस निराशा और असंतोष के माहौल में लोगों को वामपंथियों तथा समाजवाद में आशा की किरण दिखाई पड़ी। परिणामतः व्यापक स्तर पर लोग समाजवादी, मार्क्सवादी तथा लेनिनवादी विचारधारा द्वारा एकता के सूत्र में बंधने लगे, इन्होंने अपना वर्ग संघर्ष तेज किया तथा अपने अनेक मोर्चे स्थापित किये। देश के राजनीतिक परिदृश्य में अनेक समाजवादी तथा कम्युनिस्ट संगठन और नेता उभरकर सामने आये जिन्होंने राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक कठिनाइयों के क्रांतिकारी हल की वकालत की। सरकार ने भी मजदूर आन्दोलन की बढ़ती हुई शक्ति को रोकने के लिए तरह-तरह के उपाय किये। 1919-20 में 'मद्रास श्रम विभाग' और 'बम्बई श्रम विभाग' खोला गया, 1921 में ट्रेड यूनियन बिल' तैयार किया गया तथा 1922 में 'बम्बई डिस्प्यूट्स कमेटी' बनायी गयी।

भारत में कम्युनिज्म के प्रचार का श्रेय एम. एम. राय को है, जिन्होंने अक्टूबर 1920 को ताशकंद में 'भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी' की आधारशिला रखी। इसके बाद देश के सभी प्रमुख शहरों कलकत्ता (मुजफ्फर, अहमद, काजी नसरूल इसलाम), बम्बई (श्रीपाद अमृत डांगे), मद्रास (मायापुरम सिंगारवेलु चेट्टियार) तथा लाहौर (गुलाम हसन) में कम्युनिस्ट ग्रुपों की स्थापना हुई। भारत में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना का श्रेय एक ऐसे व्यक्ति सत्यभक्त को हो जिन्होंने सितम्बर 1924 में कानपुर में 'भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी' का स्थापना की थी, जिसका भारत में काम करने वाले कम्युनिस्ट ग्रुपों से कोई सम्बन्ध नहीं था। 1928 में सभी प्रान्तीय संगठनों को मिलाकर एक केन्द्रीय संगठन वर्कर्स एण्ड पीजेंट्स पार्टी, की स्थापना की गयी। इस समय सारा विश्व महान आर्थिक मंदी के दौर से गुजर रहा था; इसलिए इस दौरान समाजवादी विचारधारा और कम्युनिस्ट अधिक लोकप्रिय हुए और 'वर्कर्स एण्ड पीजेन्ट्स पार्टी' आम जनता का संगठन बन गया। पार्टी ने साम्राज्यवाद का अंत कर उत्पादन और वितरण के साधनों के सामाजीकरण पर आधारित मजदूर-किसानों का गणतंत्र स्थापित करना तथा उसके द्वारा समाजवाद के लक्ष्य की प्राप्ति अपना उद्देश्य घोषित किया। हॉलांकि कम्युनिस्ट पार्टी ने अपने आप को कांग्रेस के अन्दर ही एक सशक्त वामपक्ष के रूप में बनाये रखने का प्रयास किया। परन्तु रणनीति के प्रश्न पर उनमें मतभेद था कुछ लोगों का विचार था कि कांग्रेस के राष्ट्रीय आन्दोलन का समर्थन करना विदेशी शोषकों के स्थान पर देशी शोषकों का समर्थन करने जैसे है, क्योंकि बर्जुआ वर्ग देश की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष इस उद्देश्य से कर रहा था कि वह ब्रिटिश पूंजीपतियों के शोषण के राज्य के स्थान पर अपने शोषण का राज्य स्थापित कर सके। अतः श्रमजीवियों को राष्ट्रीय आन्दोलन को समर्थन प्रदान करने के पक्षधर थे। इसी बीच कुछ ऐसी घटनायें घटी जिससे कम्युनिस्टों को बहुत बड़ा धक्का लगा जैसे-1922-24 के बीच कुछ कम्युनिस्टों को गिरफ्तार कर उनके खिलाफ राजद्रोह का इलजाम लगा। पेशेवर में मुकदमा चलाया गया। 1924 में 'कानपुर षडयंत्र केस' के अन्तर्गत श्रीपाद अमृत डांगे, मुजफ्फर अहमद, गालिनी गुप्ता और शौकत उसमानी को चार-चार साल कैद की सजाएं दी गयी। ब्रिटिश शासकों ने मजदूर एवं कम्युनिस्ट आन्दोलन पर सबसे बड़ा आक्रमण 20 मार्च 1929 को उस समय किया जब मेरठ षडयंत्र केस के अन्तर्गत 32 बड़े नेताओं पर मुकदमा चलाकर कम्युनिस्ट आन्दोलन को कुचलने का प्रयास किया, जिसमें तीन ब्रिटिश कम्युनिस्ट (फिलिप स्टैट) बेंजमिन फ्रांसिस ब्रैण्ड तथा लेस्टर हचिन्सन भी शामिल थे। यही काफी नहीं था, कम्युनिस्टों ने इसी बीच एक आत्मघाती कदम तब उठाया, जब उसने अपने आप को राष्ट्रीय कांग्रेस से अलग कर उसे पूंजीपति वर्ग की पार्टी घोषित किया, जवाहर लाल नेहरू तथा सुभष चन्द्र बोस जैसे बामपंथी नेताओं को पूंजीपतियों का एजेन्ट कहा, गांधी-इरविन पैक्ट को राष्ट्रवाद के साथ कांग्रेसी विश्वासघात की संज्ञा दी और साम्राज्यवाद

के विरूद्ध सशक्त संघर्ष की बात करने लगे। इन कारणों से कम्युनिस्ट, राष्ट्रीय आन्दोलन से अलग-थलग पड़ गये तथा 1934 में इसे गैर कानूनी पार्टी घोषित कर दिया गया। फिर भी कम्युनिस्ट पार्टी का समूल नाश अभी नहीं हुआ क्योंकि 1934 के सविनय अवज्ञा आन्दोलन के बाद इसकी लोकप्रियता में पुनः बृद्धि हुई तथा 1935 में पी.सी. जोशी ने कम्युनिस्ट पार्टी का पुनर्गठन किया। कम्युनिस्ट पार्टी तथा कांग्रेस के सम्बन्ध एक बार पुनः सामान्य होने लगे तथा जुलाई 1942 में इसे कानूनी घोषित कर दिया गया।

मार्क्सवादी तथा समाजवादी विचारधारा से प्रभावित और गांधीवादी रणनीति से असंतुष्ट कुछ कांग्रेसजनों ने अक्टूबर 1934 ई. में बम्बई में 'कांग्रेस समाजवादी पार्टी' की स्थापना की। इसमें जय प्रकाश नारायण, आचार्य नरेन्द्र देव, मीनू मसानी तथा अशोक मेहता के नाम विशेष उल्लेखनीय है। ये लोग भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की वर्तमान धारा असंतुष्ट थे। उनका मुख्य उद्देश्य था कम्युनिस्ट पार्टी की बढ़ती हुई शक्ति को रोकना। समाजवादियों ने घोषित किया कि वे कोई नया संगठन नहीं बना रहे है बल्कि कांग्रेस सोसलिस्ट पार्टी, कांग्रेस के अन्दर का ही एक संगठन है और हम कांग्रेस को रूपान्तरित कर उसे समाजवादी सिद्धान्तों को मानने के लिए बाध्य करेंगे। अतः यह कांग्रेस के अन्तर्गत कैडर पर आधारित पार्टी थी। इनके अनुसार कांग्रेस पूरे देश की जनता का संगठन था। अतः मजदूरों को राष्ट्रीय आन्दोलन में कांग्रेस का सदस्य बनकर ही भाग लेना चाहिए, उनकी कोई स्वतंत्र भूमिका नहीं होनी चाहिए। प्रारम्भ में सोशलिस्टों ने कांग्रेस के नेतृत्व में परिवर्तन की बात रखी, परन्तु इन लोगों ने कांग्रेस के वर्तमान नेतृत्व से इतना अधिक मतभेद नहीं बढ़ाया कि वह टूटने के विन्दु तक पहुंच जाय। जब भी खिंचतान टूटने की सीमा तक पहुंचा, कांग्रेस सोशलिस्टों ने अपने सिद्धांतों को दरकिनार कर यथार्थवादी दृष्टिकोण अपना लिया। उन्हें जल्द ही इस बात का एहसास हो गया कि भारतीय जनता को मात्र गांधीजी के नेतृत्व में ही लामबन्द किया जा सकता है। इसके चलते अन्य बामपंथी गुटों तथा दलों ने इनके प्रति काफी रोष भी रहा। 1939 में त्रिपुरा कांग्रेस के बाद जय प्रकाश नारायण ने कहा था कि ''हम समाजवादी लोग नहीं चाहते कि कांग्रेस में गुटबाजी हो, हम नेतृत्व में प्रतिस्पर्धा कायम करना नहीं चाहते। हमारी चिन्ता का विषय कांग्रेस की नीतियाँ और कार्यक्रम मात्र है। हम कांग्रेस के निर्णयों को प्रभावित मात्र करना चाहते हैं। पुराने नेताओं के साथ हमारे चाहे कैसे भी मतभेद हों, उनके साथ हम लोग झगड़ा नहीं चाहते। साम्राज्यवाद के विरूद्ध संघर्ष में हम सब कन्धे से कन्धा मिलाकर आगे बढ़ना चाहते है।'' हालांकि कांग्रेस सोशलिस्टों ने प्रारम्भ से ही विचारधारात्मक मतभेद था। परन्तु इनके बावजूद सम्पूर्ण पार्टी ने समाजवादी सिद्धान्त के रूप में मार्क्सवाद को स्वीकार किया। 1935 में कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी तथा कम्युनिस्ट पार्टी के बीच समझौता भी हुआ, परन्तु यह अधिक दिनों तक कायम नहीं रह सका।

कांग्रेस के अन्दर जवाहर लाल नेहरू तथा सुभाष चन्द्र बोस ऐसे नेता थे जो कि समाजवादी विचाराधारा से ओतप्रोत थे तथा जिन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलन को समाजवादी दृष्टिकोण प्रदान की। नेहरू ने 1927 में पराधीन देशों के 'ब्रशेल्स कांग्रेस' में कांग्रेस का प्रतिनिधित्व किया तथा रूस का दौरा किया। जिसके उपरान्त उनकी राजनीतिक विचारधारा में क्रांतिकारी परिवर्तन आया और वे वामपंथी तथा समाजवादी विचारों के प्रतीक बन गये। नेहरू ने कहा कि जब तक आम व्यक्ति को आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त नहीं होती तब तक राजनीतिक स्वतंत्रता का कोई औचित्य नहीं है। यहाँ उन्होंने समाज के आर्थिक ढांचे को समाजवादी रूप देने के लिए संघर्ष किया। उन्होंने विश्व और भारत की समस्याओं के समाधान का एक मात्र उपाय समाजवाद को स्वीकार किया। मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित होने के कारण नेहरू ने वर्ग संघर्ष पर भी जोर दिया। जिसके कारण गांधीजी से उनका कुछ मतभेद भी हुआ, क्योंकि गांधीजी के दर्शन में वर्ग संघर्ष को कोई स्थान प्राप्त नहीं था। लेकिन मार्क्सवाद के प्रति नेहरू का यह मोह गांधी तथा दक्षिण पंथी कांग्रेसियों से मोहभंग का कारण न बन सका, बल्कि नेहरू ने कांग्रेस के भीतर ही रहकर उसको समाजवादी दिशा प्रदान करने तथा उसमें किसानों-मजदूरों को शामिल करने का प्रयास किया। नेहरू ने सुभाष चन्द्र बोस के साथ मिलकर विभिन्न शहरों में 'इंडिपेंडेन्स लीग' की स्थापना की। बोस पर भी बामपंथी राजनीति का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। उन्होंने 1939 ई. में 'फारवर्ड ब्लाक' की स्थापना कर उसके झण्डे के नीचे सभी वामपंथियों को एकत्र करने का असफल प्रयास किया और अन्ततः 1942 ई. में 'आजाद हिन्द फौज' को पुनर्गठित कर क्रांतिकारी रूप से स्वराज्य प्राप्ति का प्रयास किया लेकिन सफलता न मिली। भगत सिंह तथा चन्द्रशेखर आजाद जैसे अतिक्रांतिकारी भी समाजवाद की ओर झुकते हुए प्रतीत होते हैं, जब 08 अप्रैल 1929 ई. को हड़तालों पर अंकुश

लगाने तथा मजदूरों के राजनीतिक क्रियाकलापों पर नियंत्रण स्थापित करने के उद्देश्य से केन्द्रीय विधानसभा में 'ट्रेड डिस्प्यूट बिल' पारित किया गया तो सरदार भगत सिंह एवं बटुकेश्वर दत्त ने बमों का धमाका कर ब्रिटिश शासकों की स्वेच्छाचारिता के विरूद्ध रोष प्रकट किया।

इसी के समानान्तर किसानों, मजदूरों तथा छात्रों के कुछ अन्य संगठन भी थे जो बामपंथी आन्दोलन को सहयोग प्रदान कर रहे थे। कम्युनिस्टों ने विभिन्न प्रान्तों में 1925-27 ई. के दौरान 'मजदूर-किसान पार्टी' का गठन किया तथा दिसम्बर 1928 ई. में कलकत्ता में 'अखिल भारतीय मजदूर किसान पार्टी' की स्थापना की गयी। किसानों ने भी साम्राज्यवादी सत्ता को उखाड़ फेंकने का निश्चय किया तथा अप्रैल 1936 में लखनऊ में 'अखिल भारतीय किसान सम्मेलन' का आयोजन कर 'अखिल भारतीय किसान सभा' की स्थापना की गयी। किसान सभा ने लाल झण्डे को पार्टी का झण्डा स्वीकार किया। 01 सितम्बर को किसान दिवस मनाने का निर्णय किया। 1936 ई. में ही 'अखिल भारतीय छात्रसंघ' तथा 'प्रगतिशील लेखक संघ' का भी गठन किया गया।

अन्ततः यह कहा जा सकता है कि यद्यपि वामपक्ष भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को सम्पूर्ण रूप से समाजवादी आधार प्रदान करने में असफल रहा तथापि कांग्रेस तथा स्वतंत्रता संग्राम में उसका योगदान अविस्मरणीय है। यदि 1920 ई. के बाद कांग्रेस की नीतियों पर दृष्टिपात करें तो उसपर धीरे-धीरे समाजवादी तत्वों का प्रभाव परिलक्षित होता है। कांग्रेस तथा उसके दक्षिण पंथी नेताओं ने स्वीकार किया कि भारतीय जनता की दीन दशा के लिए साम्राज्यवादी शासन के अतिरिक्त भारतीय समाज का आंतरिक सामाजिक-आर्थिक ढांचा भी उत्तरदायी है। आर्थिक प्रश्न पर कांग्रेस ने रुचि लेना प्रारम्भ किया और 1929 में बम्बई प्रस्ताव, 1931 में कराची अधिवेशन में आर्थिक नीति पर प्रस्ताव, 1936 में फैजपुर अधिवेशन में आर्थिक नीति पर प्रस्ताव तथा 1938 में राष्ट्रीय योजना समिति की स्थापना कर जनता के आर्थिक समस्याओं को हल करने का प्रयास किया। 1937 ई. में जब कई प्रान्तों में कांग्रेसी सरकारों का गठन हुआ तो कुछ हद तक कृषकों की समस्याओं का समाधान भी हुआ, जिसमें किसानों के पुराने ऋण माफ किये गये, बेदखली रोकी गयी, लगान कम किया गया और उसकी अनियमित वसूली बन्द की गयी। कांग्रेस को मजबूत करने में वामपंथियों ने सहयोग ही दिया। किसानों और मजदूरों के संगठन बने जिन्होंने कांग्रेस को व्यापक आधार पर प्रदान किया और कांग्रेस श्रमजीवियों, किसानों और मजदूरों की पार्टी बन गयी। कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर जब नेहरू तथा सुभाष चन्द्र बोस जैसे समाजवादियों का चुनाव हुआ तो वामपंथियों तथा भारतीय सर्वहारा वर्ग की महान जीत थी।

विचारधारा और संगठन दोनों ही दृष्टियों से देखा जाय तो कांग्रेस का बामपक्ष की ओर झुकाव बढ़ा, जैसा कि जवाहर लाल नेहरू ने कहा था ''भारतीय राष्ट्रवाद को महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तन की दिशा में ठेल दिया गया है, और आज कुछ अनिश्चय की स्थिति में सही यह एक नयी प्रतिस्पर्धी विचारधारा के आस-पास चक्कर काट रही है।'' राष्ट्रीय आन्दोलन पर बामपक्ष मूलाधिकार और आर्थिक नीति को लेकर पारित प्रस्तावों में भी झलकता है, जिन्हें 1931 के कांग्रेस के करांची अधिवेश में पारित किया गया था।

सन्दर्भ

आचार्य नरेन्द्र देव (2009) -*'राष्ट्रीयता और समाजवाद',* नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया

चन्द्र, प्रो. विपिन (1998) -*'भारत का स्वतंत्रता संघर्ष',* हिन्दी माध्यम कार्यालय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

चन्द्र, विपिन, त्रिपाठी अमलेश, डे. वरूण (1998) -*'स्वतंत्रता संग्राम',* नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया

ग्रोवर, बी. एल., यशपाल (1997) -*'आधुनिक भारत का इतिहास',* (एक नवीन मूल्यांकन), एस. चन्द एण्ड कम्पनी लि., रामनगर, नई दिल्ली-110055

शुक्ला, आर. एल. (1998) -*'आधुनिक भारत का इतिहास',* हिन्दी माध्यम कार्यालय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

लेखकों के लिए निर्देश

शोधपत्र का अनुरोध

लेखक अपना शोधपत्र डॉ. मनीषा शुक्ला ,प्रधान सम्पादिका आन्वीक्षिकी भारतीय शोध पत्रिका को ई-मेल पर प्रेषित करें। (maneeshashukla76@rediffmail.com)

प्राप्त शोधपत्र पत्रिका में प्रकाशन के पूर्व पुनर्निरीक्षित किये जायेंगे। स्वीकृत शोधपत्र कहीं और प्रकाशित नहीं होना चाहिए और न ही उस शोधपत्र का कोई भी भाग प्रधान सम्पादिका के अनुमति के बिना कहीं और प्रकाशित किया जा सकता है। कृपया अपने शोधपत्र की पाण्डुलिपि निम्न भागों में तैयार करें,शीर्षक ;सारांश ;पाण्डुलिपि ;पुस्तक संदर्भ सूची। कृपया पुनर्निरीक्षण की गुणवत्ता में सहायता करने हेतु अपना नाम पता पाण्डुलिपि पर न दें।

शीर्षक :शीर्षक पाण्डुलिपि पर अवश्य दें,किन्तु अपना पूरा नाम,पता,संस्था जहाँ पर अध्ययन अथवा अध्यापन कार्य सम्पादित किया गया हो, आपका विषय,दूरभाष अथवा मोबाइल,फैक्स,ई-मेल पत्राचार हेतु अलग पृष्ठ पर अवश्य दें। उपर्युक्त तथ्य आपके शोधपत्र के शब्द सीमा के अन्तर्गत ही माना जायेगा।

सारांश :कृपया शोधपत्र का सारांश 120 शब्दों में दें।

पाण्डुलिपि :इसके अन्तर्गत मुख्य पाठ्य सामग्री होगी ; जो 5 से 10 पृष्ठ तक होनी चाहिये। शोधपत्र 10 पृष्ठ से (सारांश,शब्द संक्षेप,संदर्भ सूची समेत)अधिक प्रकाशन हेतु स्वीकार नहीं किया जायेगा। अन्यथा वृहद् शोधपत्र(10 पृष्ठ से अधिक) प्रकाशन में देर भी हो सकती है। लेखक को यह बात स्वीकार होनी चाहिए कि शोधपत्र पुनर्निरीक्षण के दौरान किये गये संशोधन उन्हें मान्य होंगे। शोधपत्र प्रकाशन के दौरान त्रुटि की सम्भावना न बने इसका पूरा ध्यान रखा जाता है फिर भी कोई त्रुटि पाये जाने पर लेखक संशोधित रीप्रिंट प्राप्त कर सकता है ; पत्रिका में संशोधन की व्यवस्था नहीं है।

सन्दर्भ वर्णमालाक्रामानुसार :शोधपत्र के समापन पर कृपया संदर्भ वर्णमाला क्रमानुसार दें। पत्रिका का वर्ष,लेखक, पृष्ठ संख्या,भाग इत्यादि विस्तार से दें। पुस्तक शीर्षक या पत्रिका शीर्षक इटालिक दें।

पुस्तक :प्रकाशक का नाम,संस्करण संख्या,प्रकाशन वर्ष,लेखक का नाम,पुस्तक का नाम,पृष्ठ संख्या

पत्रिका :पत्रिका का नाम,लेख का शीर्षक,लेखक का नाम,प्रकाशक का नाम,अंक संख्या/माह,वार्षिक अथवा अर्द्धवार्षिक अथवा मासिक जो भी हो स्पष्ट करें।

समाचार पत्र :प्रकाशक,तिथि,सन् ,पृष्ठ संख्या,

इण्टरनेट :वेबसाइड,पृष्ठ संख्या,मुख्य शीर्षक,अन्तः शीर्षक।

मानचित्र एवं सारणी :मानचित्र एवं सारणी अथवा चित्र शोधपत्र की समाप्ति के अन्त में दें। यह ब्लैक एण्ड व्हाइट ही होना चाहिए। इसका स्पष्ट संकेत पाण्डुलिपि में दें(उदाहरण सारणी संख्या 1)

विशेष :कृपया अपना शोधपत्र ई-मेल करने के बाद डॉक से अवश्य भेजें। अपने शोधपत्र के साथ-साथ अपना वायोडाटा, फोटो,स्वपता लिखा लिफाफा(25 रू के टिकट सहित)भेजें। शोधपत्र यदि हिन्दी भाषा में है तो ए.पी.एस प्रियंका रोमन(ए.पी.एस. कार्पोरेट 2000++)में तैयार सी.डी के साथ दें। शोधपत्र प्राप्त होने के एक सप्ताह के अन्दर लेखक को स्वीकृति पत्र प्रेषित कर दिया जायेगा। ई-मेल से प्राप्त शोधपत्र हेतु ई-मेल से स्वीकृति भेजी जायेगी। शोधपत्र प्रेषित करने के पूर्व प्रधान सम्पादिका से दूरभाष पर अवश्य सम्पर्क करें। सम्पादक मण्डल अथवा सलाहकार समिति में सम्मिलित करने का अंतिम निर्णय संस्था का होगा।

सदस्यों से निवेदन है कि वर्ष में 20 सदस्य पत्रिका से जोड़कर संस्था का सहयोग करें।

Search Research papers of The Indian Journal of Research Anvikshiki-ISSN 0973-9777 in the Websites given below

http://nkrc.niscair.res.in/BrowseByTitle.php?keyword=A

National Knowledge Resource Consortium

www.icmje.org

ICMJE INTERNATIONAL COMMITTEE of MEDICAL JOURNAL EDITORS

www.scholar.google.co.in

Google scholar

www.kmle.co.kr

KMLE 의학 검색 엔진
Korean medical library engine
http://www.kmle.co.kr

www.fileaway.info

File Away

www.banaras.academia.edu

Academia.edu
follow research

www.www.edu-doc.com

Edu-Doc

www.docslibrary.com

docslibrary
Search Any Document Files Over The Internet!

www.dandroidtips.com

MyCelular.ORG

www.printfu.org

pdf search engine
ARTAPP.NET

www.cn.doc-cafes.com

DOC CAFES

www.freetechebooks.com

Tech eBooks

www.google.com

Google India

IJRA
www.onlineijra.com

ISSN 0973-9777
09739777
₹ 1000/-